साँप

डॉ. उम्मेदसिंह बैद 'साधक'

Published by
Shuktika Prakashan
New Alipur, Kolkata 700063

Saanp

Written by Dr. Ummedsingh Baid 'Sadhak'
ISBN : 978-93-84435-24-0
Published by : **Sustika Prakashn**
Unit 8, 5th floor, Phase-1
New alipur market complex,
Kolkata 700063
1st Edition , 2016
©All rights reserved to Authour

Printed By: Mishka infotech pvt. Limited
Unit 8 5th floor, Phase 1
New alipur market complex
Kolkata 700053
Price: Rs 40/-
Cover : Pathik Sahoo

साँप

डॉ. उम्मेदसिंह बैद 'साधक'
प्रकाशक : शुक्तिका प्रकाशन
यूनिट ८, ५ फ्लोर, फेज – १
कोलकाता – ७०००६३
मुद्रक : मिसका इन्फोटेक प्रा. लिमिटेड
यूनिट ८, ५ फ्लोर, फेज १
न्यू आलीपुर मार्केट कॉम्प्लेक्स
कोलकाता७०००० -५३
मूल्य :रू ४०/-

प्रस्तावना

यह कहानी गाँधी-विद्या-मन्दिर, सरदारशहर में आयोजित जीवनविद्या शिविर में उतरी।

किसी प्रतिभागी का प्रश्न था कि भ्रम बनता कैसे है? शंकराचार्य ने पूरे जगत को ही भ्रम कह दिया, जबकि सारा जड़-चेतन जगत अपनी निरन्तर बदलती दृश्यावलियों सहित प्रत्यक्ष है। मनोविज्ञान में वर्णित 'सपनों का कालमान' और उसी विषय पर हॉलीवुड की प्रसिद्ध फ़िल्म 'इन्सेप्शन' की विषयवस्तु सामने आई। स्टीपन हॉकिन्स की 'देश-काल-युग्म' 'स्पेस-टाईम-कन्ट्यूनिम' भी नई उलझन देता है। जीवमध्यस्थ दर्शन की रोशनी में 'काल' को समझने के हल्के से प्रयत्न से स्पष्ट हुआ कि 'काल और देश' परस्पर जुड़े हुए हैं; इनका सारा सन्दर्भ देहाभिमान से जुड़ा है और 'जीवन इकाई' के सन्दर्भ में 'काल-देश' का अस्तित्व नहीं है।

इसी पृष्ठभूमि पर वहीं चलते सत्र में यह कहानी लेपटोप पर उतर गई।
आज 4-5 वर्ष बाद इसके प्रकाशन के समय सिर्फ़ इतना ही सम्पादन किया है कि कहानी के अन्तिम टुकड़े को हटाकर स्वकथ्य के साथ जोड़ रहा हूँ।

कर्ता-द्रष्टा-भोक्ता-भागीदार

अब पाठक चाहें जिस तरीके से इस कहानी को पूरा कर ले। जैसे चाहे पटाक्षेप कर दें।
जीवन-विद्या-शिविर में नये-पुराने सभी प्रतिभागियों के बीच चले सँवादों से निकला यह कथानक इस विचार की उपज है कि आखिर भ्रम बनता/बढता कैसे है? और भ्रम से निकलने के रास्ते कितने सरल-सहज हैं, मगर हमारे जीने का ढंग भ्रमित मान्यताओं/स्वीकृतियों/आशा-विचार-इच्छाओं से बना है ; वही भ्रम से निकलने की सबसे बड़ी बाधा है। इससे निकलना चाहते ही निकला जा सकता है ।

कहाँ है साँप? वैसे भी आदमी से घबराया साँप आदमी के ड्राईंग-रूम तक आने की मूर्खता नहीं करता। यह मूर्खता आदमी को मुबारक। अपने आवारा-हीरो-टोम्पू का कोबरा-लेदर- बेल्ट मिनि बल्ब की नीली रोशनी व हल्के धुंधलके में साँप दिख सकता है। पहले से ही लीला से डरा बच्चा-दिल महेश ... वह तो पहले से ही रस्सी को साँप माने बैठा है। अरे जब वह लीला-माथुर-काण्ड का गवाह है, तो अपने साथ किसी झूठी 'आशा' को क्यों नत्थी होने दे रहा है? किसी ने मुझे 'अशिष्ट-दुश्चरित्र कहा, और मैं प्रतिक्रिया में सरे-आम प्रलाप कर गया .....'कर्म करने में स्वतन्त्र-फल भोगने में परतन्त्र' हुआ।

लधु-शंका के लिये ड्राईंग-रूम में आते ही पहला काम रोशनी करना होता है यार! महेशजी पहले साँप तलाशते हैं, और उससे निपटने के लिये अपनी तयशुदा मुसीबत लीला को नींद से जगाते हैं....अब भुगतो। अब इस सांप को मारने के क्रम में ड्राईंग-रुम का कबाड़ा ही होना है, साँप है कहाँ जो मरेगा?

लाठियों-डंडो का जितना प्रहार साँप पर होगा, उतना ही फ़र्नीचर टूटना है। आपको कहानी में मजा आया हो तो आप भी भुगतो...वरना समाधान तो रखा ही है...होना ही है।

लीला बिना निरीक्षण-परीक्षण के हनुमानजी की पूँछ को सौ योजन लम्बा करने में माहिर ही हे .....जय हनुमान ज्ञान-गुन सागर....वहीं से ले लो ना ज्ञान। दूकानें तो अनगिनत खुली हैं.....साँप को रेंगने-चलने और फुफकारने में क्या कठिनाई है?

लीला का विस्तार है सुतृप्ति .....'जैसी दृष्टि-वैसी सृष्टि' की मान्यता है ना आपकी भी ....तो बिचारी लड़की 'प्रेम में सुतृप्त' है, तो नाग के साथ नगिन की कल्पना कर लेना कौन बड़ी बात हो गई? ....और 'सचिन' ने उस कल्पना पर अपना अन्तिम शतक जड़ दिया, अब बजाओ तालियाँ! बुद्धू-बक्से पर रोज तमाश चल ही रहा है यार। देखा नहीं, शिविर के तीसरे ही दिन केकेआर टीम फाईनल में अपनी चार दिन पहले प्रकाशित 'जीत' का जश्न मना रहा था .... 'ममता –

जिन्दाबाद'। बँगाल जो आज देखता है, वही सारा देश कल देखेगा जी ....
बिना सहभागिता के फ़ाईव-स्टार सुविधा सहित विद्या पा ली .....पैसा बचाओ-भ्रम फैलाओ और विद्या के गुण गाओ .... या खुद को और भरमाओ ....जो पसन्द आये, वह माल मुफ्त में ले जाओ .....जिसको जहाँ मौका मिले-वहीं से माल उड़ाओ ....'
अब इस कहानी के सारे पात्र अपने ही कर्मो का फल पा गये हैं, तो बाकी कौन बचेगा? अपनी-अपनी बारी है भाई। "कृत कर्म निष्फल नहीं जाता" ..... अब यह सृष्टि आपके लिये नियम बदलने के झँझट में नहीं ही पड़ेगी ... देख लीजिये ... इसका आचरण निश्चित है।

भ्रम अन्ततः विस्फोटों में ही परिणत होते हैं ....
आतंकवादी धमाके अपने आस-पास नित्य दो बार होते सब सुनते/भोगते हैं .....अरे मैं बिजली-कट से होते धमाकों की बात नहीं कर रहा यार ! वह तो बार-बार ट्रांसफ़ार्मर उड़ने ही हैं, लिमिट से ज्यादा बिजली

हजम करता है एसी। .....सबसे बड़े धमाके तो 'कथनी-करनी-भेद' के हैं। अपने आचरण में ना लाकर रटे-रटाये भागवत-रामायण-गीता-पाठ तो चौबीस घंटे बीसीयों चैनलों पर चल ही रहे हैं .....

यहाँ भी वही नाटकीयता? .....अब इस नाटक में कोई 'मेरा प्रिय आदमी/साथी/गुरु' नायक बन जाने मात्र से मैं अपना मुँह बन्द रक्खूँ ..... भ्रम ऐसे ही सम्पोषण पाता है। महेश ने लीला के चक्कर में मुँह बन्द रक्खा था ना.....

'आगे की पीढी आगे' तो लीलाओं पर सुतृप्तियाँ हावी होती ही हैं .....जाँच लेना पाठक। हर घर की तरह आपके घर में भी 'सुतृप्तियाँ' अपना रोल निभाने आ ही रही हैं .....और हाँ, ...यह साधक अपने पोते-पोतियाँ की चिन्ता इसलिये कर रहा है कि उसके अन्तिम स्नान करके नये वस्त्र पहनने का समय सन्निकट है ..... किस फ़ेक्टरी का तैयार कपड़ा चुन सकूँ, यह पूर्व-तैयारी भी करनी है ना। कनक-काँचन-

कामिनी द्वारा भ्रमित रूप में कुछ तो कीमत देनी ही पड़ेगी पाठक! आपके जूते सिर-माथे।
'पैसा अन्ततः अपराध में ही जाता है' अरे भाई। जहाँ से आया है, वहीं तो जायेगा। सदुपयोग से पहले इसके 'अधिमूल्यन' से नहीं निपटना है क्या? और सही जीने की शुरुआत इसके सिवा कहाँ से कैसे शुरू हो सकती है ..... जिज्ञासा है पाठक। मदद चाहना और मदद करना नैसर्गिक प्रक्रिया है, कर दो ना।
पूरी भ्रम-कथा में भ्रम से बढकर कोई अपराध दुष्कर्म नजर आता हो तो बतावें .....कृपया बतावें।
.... आप मुझसे ज्यादा समझदार हैं, आगे हैं ..... आगे की पीढी में जो हैं ..... आपसे क्षमा क्या माँगना ..... हाँ, मेरे दोषों को चिन्हित करके बता/ समझा सकें तो मेरी कृतज्ञता शत-गुणित हो जाये ..... 'जागृति-क्रम में सहयोग का अनुबन्ध ही तो है हमारा सम्बन्ध !'
सम्बन्ध पहचानो बन्धु! निर्वाह तो हो जाना है ..... या पहचानने से पूर्व भी निर्वाह का कोई रास्ता बनता है? जैसे बिना समझे समझाने का व्यवसाय जोर-शोर

से चल ही रहा है ! ..... उसे भी और जोर से चलाने का अभियान लेकर उछल-मचल रहे हैं सारे संस्थान। .....शुभ-कामना दोस्तों!

— साधक की शुभ-कामनायें स्वीकारें।

एक – अचानक

रात अचानक महेश की आँख खुल गई।
लघु-शंका-निवृत्ति हेतु कमरे से बाहर आया,
ड्राईंग-हाल में कारपेट पर
बड़ा सा साँप दिखाई दिया!

कदम वहीं रुक गये,
बाथ-रुम खोलने की हिम्मत ही ना हुई।
धीरे से आकर श्रीमतीजी को जगाया।

"शायद ड्राईंग-रूम में साँप आ गया है …"
महेश ने फुसफुसाते हुये कहा।
लीला घबराई, - "कहाँ काटा है…?"
महेश को बाहों से थामकर जानना चाहा।
"डरो नहीं, मैं सावधान था… काटा नहीं…"

"मम्मी-पापा को बताया…?"-लीला की घबराहट ने पहला मोड़ लिया।

घबराहट/संकट में ही उसे
मम्मी-पापा याद आते हैं।
“उनके कमरे तक कैसे जाता,
बीच में बैठा है…
… तुम देखो…”
- महेश लीला से ज्यादा डरा हुआ है।
“अब मैं क्या देखूँगी… तुम क्या झूठ बोलोगे?”
“अब यह बात तो रहने ही दो …
…मेरे कहे पर तो तुमको हमेशा ही शक रहता है,
… जरा लाईट जलाकर देख लेने लो …
क्या जाने साँप हो या कोई रस्सी…”
महेश ने बुद्धि लगाई।
“तुम भी … अभी साँप, अभी रस्सी…
तुम क्या इतने बुद्धू हो कि
रस्सी को साँप कह दोगे…”
-लीला ज्यादा समझदार निकली।

उसी समय लीला की ममता ने सिर उठाया,

लाडली बिटिया सुतृप्ति को फोन लगाया।
“अब उसे क्यों जगा रही हो …
वह बच्ची क्या करेगी…?” महेश खीजा।
“अरे, उसे सावधान तो करना पड़ेगा ना,
हड़बड़ी में बाहर ना निकाल आये”
कहते हुये मोबाईल देखा
सुतृप्ति का फोन
बिजी-टोन दे
रहा था।

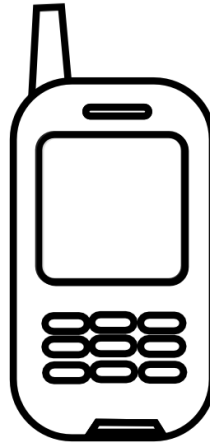

दो - मम्मी-पापा

सुतृप्ति को छोड़कर
लीला ने पापा को मोबाईल मिलाया।
पापा की नींद तो आजकल कच्ची ही होती है।

तत्काल मोबाईल उठाया,
चौंके … रात को डेढ बजे बहू का फोन?
कहीं फिर से दोनों लड़ तो नहीं पड़े!
हे भगवान!
यह महेश का बच्चा कब समझेगा …
कब समझेगा कि
पत्नी को किसी हालत में नाराज नहीं किया जाता,
वरना न दिन में चैन मिलेगा,
न रात में आराम।
रातों की नींद हराम कर देती है पत्नियाँ …
ओह ये पत्नियाँ …
मगर इनका कोई क्या कर लेगा?

यहीं देख लो…
घोड़े बेच कर सोई हो जैसे…
बेटे-बहू झगड़ कर मेरी नींद हराम किये हैं
और ये सेठानी चैन से पसरी पड़ी है…
"अजी सुनती हो… लीला का फोन है…"
"तो मैं क्या करुँगी … आप ही सुनलो ना …"
यही उत्तर आना था, … पापाजी लाचार!
अपने माता-पिता का जोड़ा याद आ गया।
'कैसा आदर्श जोड़ा था …
कितनी सेवा की थी माँ ने…
बाबूजी के पाँव दबाये बिना सोती ही ना थी…
उनको गरम खिलाती,
खुद ठंडा-बासी खा लेती…
कभी याद नहीं आता कि
बाबूजी का मन दुखाया हो…
मन दुखाना तो दूर,
घर की उलझनों से भी बचाती…
कभी ना बताया कि

आटे का कनस्तर खाली हो गया है…
ऐसी हालात में भी
कोई मेहमान भूखा नहीं लौटा…
… इनको भी तो सम्हाला है मेरी माँ ने…
बड़के से छुटके तक सातों सन्तानें
मेरी माँ ने ही तो सँभाली।
अब सारे अपने-अपने रास्ते लगे…
इनसे तो एक बेटा-बहू भी ना संभले…
वह भी मेरे ही सिर!'
और पापाजी का यह मन ही मन बड़बड़ाना
दीवार की फ्रेम में बन्द जोड़े ने सुन लिया …
… और दोनों जैसे जीवित होकर फिर से
लड़ने का नया अवसर पा गये…
… … इधर मोबाईल की घनघनाहट में
पापाजी भला अपने पूज्य माता-पिता का यह
'परम्परागत प्रेमालाप' कैसे सुन/देख पाते?

तीन - अब बारी टोम्पू की!

महेश को अपने बेटे टोम्पू का ध्यान आया …
‘चतुर-चालाक है, साँप को निपटा सकता है…
भले ही कालिज में दो बार फेल हो गया हो,
लेकिन ऐसे उल्टे-सीधे नुस्खों में माहिर है…’
तत्काल महेश ने अपना मोबाईल तलाशा…
“अब तुम किसे फोन करोगे?”
–लीला यहाँ भी अपना
पत्नीगत अधिकार न भूली।

“टोम्पू को जगा दूँ वह लाईट जलाकर देख लेगा…”
-महेश ने जैसे इजाजत माँगी।
इजाजत भी माँगी और
अपने मोबाईल के लिये भी पूछा।
अब लीला को ध्यान आया कि
वह मोबाईल तो टोम्पू के पास ही है।
इनके एसमएस की डिटेल प्रिन्ट करने के लिये

गत रात ही दिया था।
क्या पता था कि तीन-चार घंटे मैं
ही जासूसी पकड़ी जायेगी।
लेकिन वह पत्नी ही क्या,
जो पति के हाथों पकड़ी जाये!
महेश की रग-रग से परिचित लीला ने
आँख टेढी करके पूछा –
"टोम्पू से बतियाना है, या अपनी उस दफ्तर वाली का
प्रेम-सन्देश देखने का मन हो आया? … "

अब महेश भौंचक्क!
यह आधी रात को …
क्या लीला ठानी है लीला महारानी ने!
ऑफिसवाली ? ओफ!
बिचारी दुखिया आशा एकबार
गले लगकर रो क्या ली,
इसने तो आरोपों की झड़ी ही लगा दी!
जो बात सोची भी नहीं जा सकती,

वह बात वक्त-बेवक्त …
न अवसर देखती है, न कोई मर्यदा मानती है …
फूहड़ कहीं की … …
मैं इसकी कारस्तानियों को दोहराना शुरु करुँ तो …
… ना रे! … … नई समस्यायें खड़ा कर देगी…
नौटंकीबाज … …
लेकिन अब इस आधी रात में
इस चुड़ैल से पंगा लेने की
मूर्खता तो नहीं की जा सकती …

“चलो, छोड़ो मोबाईल;
मैं लेण्ड-लाईन से बात कर लेता हूँ …
टोम्पू अपने कमरे से बाहर आकर
कम से कम देख तो ले कि साँप है भी या नहीं …
या अब तक निकल ही ना गया हो…”
-महेश ने समझौते की भंगिमा अपना ली।
लीला को चैन मिला। …
एक बार तो भेद खुलने से बच गया।

किन्तु टोम्पू से बात हुई,
तो कहीं वह डरकर राज ना खोल दे।
अच्छा है कि मैं ही बात कर लूँ उससे…

“पता नहीं, सुतृप्ति फोन क्यों नहीं उठा रही …
चलो, टोम्पू को मैं ही बता देती हूँ …
तुम्हारी बात भी रह जायेगी…”
कहकर लीला ने पहला नम्बर काटकर
टोम्पू का नम्बर लगाया।

काफी देर बाद टोम्पू ने अपना मोबाईल उठाया।
“मम्मी, प्लीज सोने दो ना!
अब क्या प्रोब्लेम हो गई?”
टोम्पू की आवाज निंदियाई न लगकर
लड़-खड़ाई सी ज्यादा लगी।
लीला चौंक पड़ी … क्या कर रहा है टोम्पू ?
“… बेटा! ड्राईंग-रूम मैं साँप है,
तुम जरा सँभलकर बाहर आओ…”

लीला ने अपनी 'कामिनी-कमीनी' आशंका को
एकबार स्थगित करके तात्कालिक समस्या कही।

"क्या मम्मी! ड्राईंग-रूम मैं साँप कहाँ से आयेगा? …
सो जाओ, सुबह देखेंगे…"
टोम्पू अब तक सम्भल गया था।
अब वह अपनी समस्या से निपटने की सोचने लगा।
… मम्मी यदि ना सोई, तो भाँडा फूटा ही फूटा!
सनकी बुड्ढा माथुर तो जान ही ले लेगा…

लीला ने फिर से अपनी बात पर जोर देकर कहा,
"साँप है बेटा। मैंने खुद देखा है…
काला, लम्बा… रेंगता साँप…
तुम्हारे कमरे की तरफ रेंग रहा था…
मैं तो डर रही हूं बेटा,
कहीं दरवाजे की दराज से तेरे कमरे मैं ना आ जाये…
तू कम से कम अपने कमरे की बत्ती जला,
मैं तेरे कमरे मैं आ रही हूँ…

सँभल के उठना टोम्पू … ”
“ना, ना मम्मी … तुम ना आना …
मैं ही आ रहा हूँ तुम्हारे पास…
पापा सो रहे हैं क्या…
और मम्मी… तुम ड्राईंग-रूम मैं ना आना…
लाईट भी ना जलाना … शान्ति रक्खो…
मैं कपड़े पहनकर आ रहा हूँ … ”
टोम्पू की समस्या अब काफी बड़ी हो गई…
वह घबरा गया।
उधर अपनी घबराहट में लीला सुन ही न पाई
तो मन में यह प्रश्न कैसे बनता कि
आधी रात में यह कपड़े पहनने की बात
टोम्पू ने कैसे कह दी?
नाइट ड्रेस तो पहने ही हुए है ना?
इस अचानक आई साँप चर्चा ने
कामिनी को परेशान कर दिया!
अब वह अपने फ़्लेट तक कैसे जायेगी…
सब देख सकते हैं;

लाईट … न जली तो साँप का भय … …
“अब मैं कहाँ छुपूँ यारा!
कुछ करो, मुझे पहले निकालो…
तुम्हारे अंकल आ गये तो कहर बरपा देंगे…”
कामिनी ने अपने अस्त-व्यस्त वस्त्र संभालते हुये कहा।

चार – सुपृप्ति

इधर सुतृप्ति सचिन से बात करके सुतृप्त हुई।
मोबाईल बन्द किया
तो मिस्ड-काल में मम्मी का नाम देखकर घबराई।

एकबार तो सोचा कि चुपचाप सो रहूँ,
सुबह देखा जायेगा … … सो भी गई,
पर जब तक शक का काँटा गड़ा है,
तब तक नींद कैसे आयेगी? …

सचिन को एस.एम.एस करके समस्या बताई…
सचिन ने उत्तर दिया कि
मम्मी को तत्काल फोन करके जानना जरूरी है कि
कहीं उनको कुछ पता तो नहीं चल गया।

सुतृप्ति भी यही सोच रही थी…
जानना तो अभी जरूरी है…
उसने घबराते-घबराते मम्मी को फोन किया।

लीला-महेश फोन से निपटकर टोम्पू के इन्तजार में
आशा-जनित समस्या को फिर ले आये।
बिचारा महेश …
सदा की तरह 'बेचारा' बने रिरिया रहा था …
लीला अपनी चाल की सफलता से और इतरा गई।
इधर ड्राईंग-रूम के साँप का मुद्दा भी
अब महेश का ना रहा।

"लीला! तुमने तो अभी साँप को देखा भी नहीं,
कैसे कह दिया कि उसका मुँह
टोम्पू के कमरे की तरफ है, और वह सरक रहा है…
… इससे तो समस्या हल होने की बजाय
और बढ जायेगी …"
महेश ने समस्या के हल की तरफ रूख किया।

लीला को यह कैसे बर्दश्त हो सकता है कि
पति-महेश उसे समझाये!

समझाने का एकाधिकार तो पत्नियों का है।
कड़े स्वर में बोली , -
"तुमसे कुछ हुआ होता
तो मुझे बीच में पड़ने की जरुरत ही क्या थी।
साँप को मारकर या भगाकर ही आते मेरे पास!
अब जब बात मुझ तक आ ही गई है,
तो मुझे अपने ढंग से निपटने दो।
अब साँप को सबसे पहले मैंने देखा है।
मैंने ही तुमको बताया,
और तुमने टोम्पू की मदद लेने की पेशकश की है।
यही बात माँ-बाबूजी के पास भी होनी चाहिये।
समझ मैं आया कि फ़िर से समझाऊँ?"

अब भला महेश की क्या मजाल जो न समझे!
वह तो इससे अलग साँस भी न ले सके।
इतने मैं सुतृप्ति का फोन आ गया।
लीला ने देखा कि माँ-बाबूजी और टोम्पू के सिवा
शतरंज की बिसात पर एक और खाना सुतृप्ति का भी

बनता है। माहिर खिलाड़ी की तरह लीला ने इस खाने
को चेक करने की चाल सोच ली ।
फोन उठाकर दर्प भरे स्वर मैं बोली ,
- "देखो सुतृप्ति! मेरी बात ध्यान से सुनो।
तुम्हारे कमरे के बाहर एक लम्बा सा कोबरा सर्प
फुंफकारता हुआ चक्कर लगा रहा है।
तुम्हारे कमरे से होते हुये भैया के कमरे की तरफ
जाते हुये मेरे पाँवों को छूता हुआ गुजरा,
तब मैं सावधान हो पाई।
बाहर आँधेरे मैं देखना कठिन है,
तुम कोई नादानी करके
कमरे का दरवाजा ना खोल बैठना। ...

बल्कि तुम भैया की मदद करो।
वह बेचारा साँप से जूझ रहा होगा।
तुम अपने मित्रों को फोन एसेमेस करके सूचित कर दो।
तुम युवा लोग साहसी और चतुर हो,
हो सकता है कि इस गँभीर समस्या से

बाहर आने का कोई मार्ग बन जाये। …
सबसे बता देना कि कोई तुम्हारे भैया के फोन पर
इस बारे मैं बात ना करे,
उसे डिस्टर्ब करना ठीक नहीं होगा।
तुम्हारे पापा भी व्यस्त रहेंगे, …
… तुम मेरा नम्बर दे देना। …
… घबराना नहीं बेटा, मैं हूँ ना!
… तू तो मेरी बहादुर बेटी है ना … हाँ
… अब फोन रखती हूँ, मुझे बहुत काम करना है।"

सुतृप्त हो गई बिटिया।
सबसे पहला फोन सचिन ही को करना बनता है, -
"ओह सचिन! आज तो बाल-बाल बच गये।
सर्प देवता ने बचा लिया …
हाँ यार! ड्राईंग-रूम मैं एक सर्प का जोड़ा अपनी प्रेम-लीला कर रहा है। मम्मी देखकर घबरा गई थी। उसी घबराहट मैं अभी ढेर सारा उपदेश देकर बोर किया है।

… और हाँ, मुझे कहा है कि मैं अपने दोस्तों को फोन करके यह बता दूँ …
… अब तुम्हारे सिवा मेरे और कौन दोस्त हैं भला।
तुम्हें बता दिया, अब चादर तान के सोती हूँ।
… तुम जानो, तुम्हारा काम जाने
… हाँ ममा और भैया को इम्प्रेस करने का
शानदार मौका है…
इस बात को फ़ेस-बुक पर डाल दो,
एक साथ तुम्हारे दोस्तों को पता चल जायेगा।
हाँ, मेरी मम्मी का मोबाईल नम्बर देना,
पापा-भैया का नहीं।
अब मुझे गुड-नाइट विश करो, … ”
“विश करुँ या किस करुँ …
वह सर्प का जोड़ा तो किस ही ना कर रहा होगा…
यार तुम्हारे मम्मी-पापा-भैया को लेशन देने आया है…
कि इस नागिन के लिये भी मेरे जैसा
नाग-देवता बैठा इन्तजार कर रहा है …
इसके कोप से बचना है तो

खुद चलाकर नाग-नागिन को मिला दो…”

सचिन जैसे हर समय मूड में ही रहता है।
- “शट-अप सचिन!
अभी का काम अभी, बाकी सब कल …
उसी रेस्त्राँ मैं मिलती हूँ… बाय!”
सुतृप्ति ने सचिन को जल्दी निपटाया,
ताकि अपने बाकी मित्रों को भी
यह रोमाँचक खबर सुना सके।
- ‘क्या थ्रिलिंग सिचुएशन बनी है … वो……व!
…एक ही रात मैं पूरे शहर की
होट-टॉक हो जायेगी सुतृप्ति!
बल्कि एसेमेस की खोज
शायद इसी अवसर के लिये हुई है…।
मम्मी ने तो एक ही साँप का कहा था,
मगर एक में कोई रोमाँस-रोमाँच की बात नहीं बनती
… फिर भी उसे देखना चाहिये पहले …

…दरवाजा नहीं तो खिड़की तो है
… जाली चढी है, नो रिस्क … ’
सुतृप्ति ने खिड़की का पल्ला जरा सा खोला,
उसी समय भैया और कामिनी आँटी
चुपके से बाहर निकलते दिखे।
सुतृप्ति का रोमाँच
सौ-गुना बढा
हुआ था।

पाँच – कामिनी

एक तो माथुर साहब अधेड़ हो चले हैं, दूसरे शराबी। दौलत के लालच में …
कामिनी ने क्लब-पार्टी के दौरान फंसा कर शादी तो कर ली, पर खाली पैसे से जिन्दगी थोड़े ही चलती है। शादी -शुदा होने की भद्रता बनाये रखते हुये सेफ गेम खेला कामिनी ने।
टोम्पू अभी बच्चा ही लगता है उनके सामने
… प्रकट में आन्टी ही कहता है
… आराम से फैमिली-फ्रेण्ड बन गई।
सुतृप्ति और टोम्पू दोनों की 'मॉड्रन आँटी' बनकर साथ-साथ पिक्चर, रेस्त्राँ, मॉल आदि घूमते।
माथुर साहब को आराम हो गया … अब उनको शराब के लिये रोक-टोक जो बन्द हो गई। बल्कि कभी-कभी तो खुद कामिनी ही उनका ड्रिंक बना देती है … और कभी कम्पनी भी दे देती है। देर रात माथुर साहब क्लब से नशे मे घर आते हैं अपने फ्लेट का ताला खोलकर

भीतर घुसते हैं। यह अन्तराल टोम्पू कामिनी दोनों को बिस्तर पर एक कर देता है।

आज यह साँप-काण्ड हो गया।
"मुझे पहले अपने फ़्लेट में घुसा दो टोम्पू …
फ़िर साँप से निपटना,
और ज्यादा साँप के भ्रम में न रहो,
फ़्लेटों में कोई सांप-टॉप नहीं आता…"
कामिनी ने साफ़ कह दिया।

भ्रम के भँवर से बाहर होने के सहज सुलभ अवसर वैसे ही बार बार दस्तक देते हैं।
जैसे कामिनी के मुख से निकला सत्य।

टोम्पू भी समझता है कि सबसे पहला काम करना तो यही है, मगर किसी ने देख लिया तो सारा भाँडा फूट जायेगा। बहुत खूँखार हैं माथुर अँकल, दोनों को एक ही गोली से उड़ा देंगे।

उसने समझाने की कोशिश भी की,
- "मैं मम्मी के रूम में जाता हूँ, उनको बात लगाता हूँ,
आप चुपके से निकल जाईये..."
"और तुम्हारा दरवाजा वापस कौन बन्द करेगा?
नहीं... मैं कोई रिस्क नहीं ले सकती... "
"मैं कह सकता हूँ कि साँप के निकल जाने के लिये
मैंने खुला किया दरवाजे को... ..."
"और मेरे दरवाजे पर वापस ताला कौन लगायेगा ...
माथुर आकर अपने हाथ से ताला खोलते हैं,
तभी चैन से सो पाते हैं...
दरवाजा खुला देख लिया तो
डुप्लीकेट चाबी वाला भेद भी खुल जायेगा।
... नो वे ... ... तुम चलो मेरे साथ्
... मुझे अपने फ़्लेट मैं सेफ करो,
फिर बाकी झमेला देखना ...
और यह साँप-वाँप की गपोड़-बाजी मैं पड़ना मत...

यहाँ ड्राईंग-रूम में कोई साँप-टाम्प नहीं आता… … ”
कामिनी ने आर्डर कर दिया।
माशूका अपने से बड़ी उम्र की हो तो रौब-दाब मानना ही पड़ता है। फिर टोम्पू को तो इसबार कालिज पास भी होना है।
इस ताले की चाबी भी तो कामिनी-आँटी ही है!

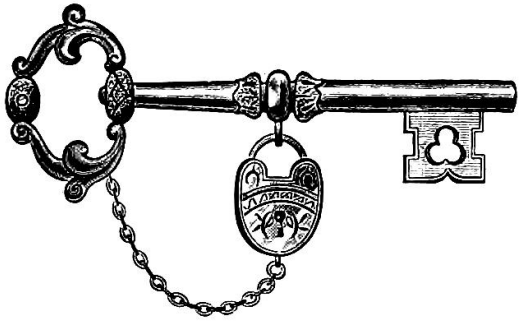

छः – सचिन

सचिन जानता है कि
सुतृप्ति अकेले उसीकी नहीं हो सकती।
न तो वह अपने पुराने दोस्तों को छोड़ना चाहेगी,
और न ही नये दोस्त बनाने का क्रेज गया है।
उसे यह बात कभी नहीं जँचती कि
एकबार जो लड़की उसकी हो गई,
वह अब उसे छोड़कर दूसरे की तरफ
आँख भी उठाकर देखे! जल-भुन जाता है सचिन।
यह अलग बात है कि सचिन के लिये भी
सुतृप्ति न तो पहली है, ना अन्तिम।
वह समझ ही नहीं पाता कि
हिन्दुओं में एक ही विवाह की रीति क्यों बन गई?
अरे दशरथ के तीन थी,
कृष्ण भी तो ओफिसियली आठ रखते थे… …
काश! वह मुसलमान हुआ होता।
कम से कम चार तो मिलतीं!

कई बार कई दिशाओं से सोचा-विचारा…
मगर उसे कोई रास्ता नजर नहीं आता था।
टोम्पू को उसने दोस्त बना रक्खा था,
मूर्ख साला ज्यादा अच्छा जो होता है!
पता नहीं उसके साला बनने का चांस आ ही जाये।

ड्राईंग-रूम में सर्प-युगल की पक्की खबर में
सचिन को अपने लिये गोल्डन-चांस नजर आया।
अभी उसके पास दस-बारह कम्पूटर और लेपटोप
रिपेयर के लिये आये पड़े हैं।
एक पत्थर से दो नहीं बल्कि
चार-पाँच शिकार हो जाने संभव हैं।
हार्ड-वेयर और सोफ्ट-वेयर
दोनों विधायें साध रक्खी हैं सचिन ने …
हैकिंग … मेल … क्लाउड … ट्विटर … ओह!
सबकुछ तो उपलब्ध है…
… अब कम से कम सुतृप्ति

और उसके परिवार वालों के पास और कोई रास्ता बचेगा ही नहीं … बोलो नाग-देवता की जय!

इन्टर्नेट पर धमाका हुआ, - "श्री महेश सिन्हा की बेटी सुतृप्ति अपने पिछले जन्म में अतृप्त नागिन थी। अपने इस जन्म के नाग-प्रेमी से मिलने के लिये उसने अपने नाग-दोस्तों से मदद माँगी। एक नाग जोड़ा अभी सिन्हा-परिवार के साथ उनके ड्राईंग-रुम मैं बैठा उनको समझा रहा है। मानव की भाषा मैं बातचीत जारी है। विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि सचिन बत्रा गत जन्म से सुतृप्ति का प्रेमी है।
माँ-बेटी और सचिन का मोबाईल नम्बर ……।
……। ……।"

सात – सुतृप्ति और लीला

टोम्पू के आने से पहले ही लीला का मोबाईल नम्बर जाम हो गया। एकसाथ हजारों फोन-काल्स लीला और सुतृप्ति के मोबाईल्स पर झपट पड़े। सुतृप्ति सिर्फ अपने शहर में मशहूर होना चाहती थी, अब तो वह ग्लोबली फेमस हो गई।

लीला से एक ही सवाल,

"क्या आपके घर पर अभी बैठा है नाग-जोड़ा?"

"आपके साथ क्या बातचीत चल रही है?"

"क्या आप लोग सचिन को भी
अभी बुलाना चाहते हैं?"

"सुतृप्ति तो फेस-बुक पर है, आप क्यों नहीं हैं मेडम?"

"प्लीज, नाग-जोड़े के कुछ पिक्चर
डालिये ना नेट पर।

स्काइप पर ऑन लाइन क्यों नहीं हो जाते ?

मैं इस सीन के लिये अपना चार लाख का बैकं-बेलेंस आपके खाते में ट्रांसफर कर सकता हूँ।

और उधर सुतृप्ति का मोबाईल इन मेसेजेस से भर गया-
"जनम-जनम का प्यार है निभाने को,
सौ-सौ बार मैंने जनम लिये",
"क्या आप पहले से जानती थी कि
आप दोनों नाग हैं?,"
... "अगर परिवार-समाज आपकी शादी के लिये
तैयार ना हुआ, तो आप कैसा बदला लेंगी?," ...
"क्या आप फिल्म में काम करना चाहती हैं, तुरन्त
सम्पर्क करें,"
... "आपकी कहानी का कोपी राईट प्राईस बतावें...
ब्लेंक चेक तैयार रक्खा है।"... ...

सुतृप्ति को सारा मामला समझते देर ना लगी,
मगर लीला को माजरा समझ में ही नहीं आया।

साहित्यिक नाम रखें हैं बच्चों के - सुजय और सुतृप्ति !
मानव की सारी समस्याओं पर
जय पाये 'सुजय' और अपने

निर्मल चरित्र से समाज को तृप्त करे सुतृप्ति !

अब सुजय सुतृप्ति अपनी माँ से अधिक साहित्यिक हैं।
उनका तर्क हैं
"ममा- आपके तीर्थंकर महावीर का उपदेश है
"जियो और जीने दो।"
पहले जरा जी तो लें !
जीनें दो ना हमें अपने ढंग से!"
लाजवाब है कोई भी मां बच्चों के इस तर्क पर।
फ़िर सबकी अपनी-अपनी लीलायें,
अपनी-अपनी करनी भी तो सिर चढकर बोलती है।

सुजय नें कामिनी को जीतकर
केरियर' जीतने की राह देखी है,
तो 'सुतृप्ति' देह-भोग से सुतृप्त होने की त्वरा में
8-10 बॉय फ्रेन्ड बदल चुकी है।
जानती है लीला पर करे भी तो क्या करे ?
वह बार-बार फोन काटती रही।

न महेश को कुछ बता पा रही है ना सास-ससुर को दोबारा फोन करने का उसका मन है।

टोम्पू आ जाये तो उससे कुछ पूछा भी जाये ... बाकी तो किसी से बात करने का कोई अर्थ ही नहीं है। ...

सचिन का नाम उसने सुना तो जरूर है, मगर सुतृप्ति के बारे में शादी-ब्याह को लेकर अभी कुछ सोचा ही नहीं गया। बल्कि पहले तो टोम्पू की बहू लाने का खयाल बनता है। कई बार घर में चर्चा चलती है अब इसे टोम्पू कहना बन्द किया जाये और उसके सही नाम सुजय का इस्तेमाल किया जाये।
शादी-ब्याह का मामला ही ऐसा है कि छोटी-बड़ी अनेक बातों का खयाल करना पड़ता है। अपने पति को तो निरा भोन्दू मानती रही है लीला। जानती है कि आशा के साथ कोई चक्कर-बाजी नहीं है, फिर भी बन्दर के गले में बन्धी डोरी को छोड़ देने से कभी बन्दर मदारी के लिये मुसीबत ना बन जाये, यह दूर-दर्शिता

भी जरूरी है; आखिर इस मदारिन ने भी कभी किसी
राकेश-मदारी के साथ प्रेम-पींगें भरी हैं।
महेश राकेश को भी जानता है,
माथुर सहित दोनों की प्रेम-कहानी को भी।
किन्तु संस्कारों से बन्धा कौन भारतीय पति अपनी
पत्नी के ऐसे प्रसंगों को जुबान पर लाना पसन्द करेगा?
और ले भी आये, तो मिलेगा क्या उसे?
अब बच्चे भी शादी लायक हो गये,
नाते-रिश्तेदारों में भद्द भी नहीं पिटवानी है …
… पत्नी के तानों को सहते रहना तो
हर भारतीय पति की नियति है ही।
अब भला अपनी नियति से कौन लड़े-भिड़े?

लेकिन लीला अब अपनी नियति से कैसे निपटे?
यह साँप-प्रकारण तो एकदम उल्टा पड़ गया।
… इससे अच्छा तो महेश की बात मानकर
खुद ही साँप से निपट लेती…
… न तो सुतृप्ति को कुछ बताना पड़ता,

ना उसके लफाड़िया-लबाड़िया दोस्त को पता चलता।
... पता नहीं कैसा है यह सचिन सिन्हा।
... है तो अपने ही जाती-कुल-परम्परा का
... मगर किसी अनजाने परिवार में
कैसे अपनी बेटी दे दी जाये?
हाँ, कमलेश की बात कुछ और है।
... कमलेश से कई बार मिली भी है बिटिया
... इन छोकरियों का कुछ पता ही नहीं चलता ...
कभी-कभी उसका मोबाईल देखने की कोशिश भी की
... उसपर तो कई लड़कों के मेसेज आते हैं
... भाषा- बोली तो आजकल
यार-प्यार-विश-किश-हक-फक वाली ही हो गई है ...
इसके आधार पर इनको कुछ
कहा-सुना भी नहीं जा सकता।
इस ऊहापोह में फिर मोबाईल घनघनाया,
"हेलो मेडम! आपकी बेटी की शादी में सचिन के
नाग-दोस्तों की खातिरदारी के बारे में क्या सोचा है"

“जलती भट्टी में झोंकने का सोचा है।
आप उनका साथ तो निभायेंगे ना?
… और हाँ, अपने साथ अपने सारे दोस्तों को भी ले आईयेगा … बरातियों का भोजन बनाने को वैसे भी काफी जलावन चलावन चाहिये होगी … ”
लीला ने भरपूर वाक-कौशल का उपयोग किया, ताकि इन सारे निशाचरों से एकबार में ही पीछा छूट सके।
लीला को इन इन्टरनेट-आशिकों की लीलाओं का कहाँ पता था? वह बिचारी तो इतना भी नहीं जानती कि ये कीमती जुमले करोंड़ों फेस-बुकिया दोस्तों का लजीज भोजन बनने वाले हैं।
श्रोता ने अपनी प्रतिक्रिया सहित यह सूचना नेट पर डालने से पूर्व ड्रामें की हीरोईन से भी बात कर ली, -
“सचिन के प्रिय दोस्तों-रिश्तेदारों की खातिरदारी उनको भट्टी में बिठाकर की जानी है। आपके हाथ से वहाँ ठंडा बियर पीने को तो मिल जायेगा ना? …
 प्यार की यह नई दास्तान आपकी मम्मी ने रची है…
क्या आप हमें अपनी

लाइव मुस्कान-भरी प्रतिक्रिया से सुतृप्त करेंगी?…"
मेसेज-कर्ता नीदरलेण्ड से है
…मेसेज पढकर सुतृप्ति मुस्कुरा दी।
कमाल कर दिया सचिन ने! पूरा जादूगर है…
एक झटके में ही सातवें आसमान की सैर करवा दी …
वाह डियर… खूब जमेगी तेरे साथ।
… और उसने अपने जवाब से सचिन को भी खुश करने की ठान ली।
अब प्यार किया तो डरना क्या,
- "अरे जनाब! आप आईये तो
… सचिन के सारे दोस्तों का
आलिंगन-चुम्बन सहित स्वागत होगा।
… प्यार की यह दास्तान
ग्लोबल-युवा-दिलों की धड़कन ना बने,
तो मैं सुतृप्ति कैसी! …"

आठ – फेसबुक फैमिली

इन्टरनेट पर धमाचौकड़ी मची रही।
चिर अतृप्त नागिन का प्रेम-पगा मामला
अब सचिन-सुतृप्ति से ऊपर उठकर
पूर्व-जन्म, पुनर्जन्म में प्रेम की भूमिका,
प्रेम की देह-गत और देहातीत व्याख्यायें,
नाग-नागिन का अमर-प्रेम,
इन्सानी प्रेम बनाम नागों का प्रेम,
प्रेम की सर्वोच्चता/दिव्यता,
नागिन का बदला, बदले और प्रेम का अन्तर्सम्बन्ध,
घृणा और प्रेम, घृणा ही सबसे घातक जहर,
मानव बनाम नाग,
मानव-नाग रिश्तों में सँघर्ष के कारण,
मानव-नाग प्रेम का विश्व-साहित्य में चित्रण,
नाग मानवजाति के दोस्त या दुश्मन,
नाग बचाओ अभियान,

नाग-पक्षपातियों और नाग-विरोधियों की धड़े-बन्दी,
विश्व-नाग-मैत्री-संघ, नागों के उपकार,
नागों की दिव्यता के किस्से-कहानियाँ,
नागों के लाखों प्रकार,
नाग वंश का उद्भव और विकास,
नाग-समर्थक देशों की सूची में प्रथम भारत,
राम-कृष्ण-बुद्ध और महावीर सहित
सभी दिव्य-अवतारों के नाग-सम्बन्धों की कथायें-किंवदन्तियाँ,
लोक-कथाओं में नागों का सर्वोच्च स्थान, … … …

मजा यह कि इन समस्त विस्तारित गतिविधियों में लीला-सुतृप्ति प्रकरण मुख्यता से जुड़ा रहा। नई पीढी ने इस हथियार का इस्तेमाल पुरानी पीढी के विरुद्ध करने में बढ-चढ कर हिस्सा लिया।

सुतृप्ति ने काफी पहले फेस-बुक पर जो परिवारिक छवियाँ पोस्ट कर दी थी, उनमें से लीलादेवी का चेहरा

निकालकर यथायोग्य श्रृँगार के साथ हजारों कार्टूनों का निर्माण कर देना बच्चों का काम है।
दुनियाँ भर के बच्चों ने
बढ-चढ कर इस प्रतियोगिता में हिस्सा लिया,
अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरुष्कार-विजेताओं में
एक नाम सुतृप्ति की लण्डन-निवासी चचेरी बहन का भी है।
बच्चों का अनुसन्धान-कौशल परवान चढा,
किसी ने इस समीकरण को भी नेट पर चढा दिया।
अब लाखों पेजेज पर सुतृप्ति-सचिन-लीलायें धूम मचा रही हैं, बात की बात में इस प्रकरण के भागीदारों की सँख्या सौ करोड़ से ऊपर पहुँच गई,
ट्विटर पर ट्विपणियों की सँख्या गिनना अब संभव ही ना रहा, क्योंकि हर सेकेण्ड नई लाखों ट्विपणियाँ जुड़ती जा रहीं हैं।
और अब इन सारी गतिविधियों को टीवी-सिनेमा पर आते कितनी देर लगती/ क्यों देर लगती?

नौ - सिनेमा और अर्थ-जगत

सुतृप्ति का दिल-दिमाग
सीधा सातवें आसमान को छू रहा है।
कभी आमीर को सलमान-शाहरूख से
सवाया मानने वाली सुतृप्ति
अब स्वयँ को करीना-केटरीना-प्रियँका-विद्या से
ऊँचा देख रही है।
हालीवुड के निर्माता से करार हुआ तो
अब बॉलीवुड उसके सामने बौना हो गया।
चार हजार करोड़ के करार के साथ बनी
तीन फिल्मों पर हॉलीवुड का
दो लाख करोड़ का कारोबार हुआ,
और पूरे सिनेमा–जगत का आर्थिक चित्र
उलट-पलट हो गया।
सोने, शेयर और जमीन में फंसा पैसा
धड़ाधड़ नाग-विषयक फिल्मों में नियोजित हुआ,
क्रमशः स्विट्जरलेण्ड के बैंक

अपना दीवाला पीटने लगे।
इस बदलते अर्थ-चक्र ने
अमेरिका-चीन-अरब सहित
सभी विकसित अर्थ-व्यवस्थाओं को ध्वस्त कर दिया,
कई सरकारें और कई प्रचलित वाद
इतिहास की वस्तु बन गये।
नाग-मानव सम्बन्धों की सैकड़ों/हजारों पुस्तकें
बाजार में आईं,
तो सिनेमा जैसे जीवन के हर आयाम पर हावी हो गया।

इस नई सिनेमाई लहर के केन्द्र में सुतृप्ति-सचिन हैं,
तो उनके जीवन-चरित्र,
उनके पूर्व-जन्म की कहानियों पर कार्टून-पत्रिकायें,
सीडी, कार्टून-फिल्में और फीचर-फिल्में बनीं।
इन सबका सम्मिलित प्रभाव शिक्षा-तन्त्र पर आया,
तो नर्सरी-प्राइमारी से लेकर पीएचडी तक
नाग-कथायें कोर्स का विषय बने,
प्रेम प्रमुखता से जन-गण-मन पर छा गया।

सुतृप्ति-सुजय प्रेम के नये आईकोन बन गये।
इस तरह अर्थ, शिक्षा, साहित्य, सिनेमा, राजनीति,
आदि सभी का नये सिरे से ध्रुवीकरण हुआ।

युवा-प्रेम समाज की स्वीकृतियों में आया,
तो उसी अनुरूप न्याय-कानून व्यवस्थायें बनीं।
'सुतृप्ति-सचिन' जीवित किंवदन्ति बन गये।
नागों का प्रभाव पूरी दुनियाँ के
सिर चढकर बोलने लगा।
अब सर्वत्र नाग-पूजा होती है।
स्थापित मन्दिरों में तो नाग विराजे ही,
नागों के लाखों नये मन्दिर बन गये।
राम-कथाओं की जगह नाग-कथायें आ गईं,
और नाग-कथा के साथ 'सुतृप्ति'
सबके मन-मष्तिस्क पर छा गई।

इस अतिरेक को घड़ी के पेण्डुलम की तरह
विपरीत दिशा में गति करनी ही थी।

धीरे-धीरे नागों के विरुद्ध व्यक्ति-समूह बने,
ये समूह भी परिवेश से विरोध की खाद पाकर
पोषित-पल्लवित-पुष्पित-फलित हुये,
और इनके भीतर भी प्रतियोगिता/वर्चस्व के भाव बने।
विचारों के स्तर पर बना मतभेद
विभिन्न स्थानों पर द्वन्द्व-सँघर्षों के रूप में प्रकट होने लगा। सचिन से अतृप्त हुई सुतृप्ति, तो उनका अलग होना भी अर्थ व्यवस्था के लिए नई उछाल साबित हुआ। मीडिया ने सचिन को छिट्काया बिसराया और सुतृप्ति की बोल्ड मॉर्डन इमेज के डंके बजने लगे। नारी पुरुष के बीच बढ़ती दूरियों के कारण परिवार-समाज के स्थापित समीकरण लड़खड़ाने लगे। इन बदलते हालातों से निपटने के लिये स्थानीय स्तर से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चिन्तन-गोष्ठियाँ-सेमीनार आदि आयोजित हुये, किन्तु उन सबका परिणाम
'कोपेनहेगन' ही होना था।
सतत युद्ध-रत रहने के लिये अभिशप्त मानव-जाति
फिर से युद्ध में झोंक दी गई;

इसबार युद्ध नाग-समर्थक बनाम नाग-विरोधी समुदायों के बीच हुआ।
भावी इतिहासकार बतायेंगे कि इस युद्ध का सूत्रपात सुतृप्ति और लीला के बीच घटित हुआ।
व्यक्ति ही संस्कृति और राष्ट्र बन गए।

दस – चम्पालालजी

इधर महेश के पिताश्री चम्पालालजी अपनी बहू लीला के पुनः फोन आने के इन्तजार में टीवी-रिमोट को हाथ क्या लगा बैठे, कि हर चैनल पर लीला की सुतृप्ति अथवा सुतृप्ति की लीला ही चल रही थी। किसी एक चैनल पर लण्डन बैठी अपनी पोती डोरोथी को पहचानने में चम्पालालजी को कोई दिक्कत नहीं आई। झट से चमपालालजी ने अपनी सह-धर्मिणी को जगाया। प्रसन्नता से यह बताना ना भूले कि टीवी पर उनकी बहू-पोती का नाम ले-लेकर कहानियाँ आ यही हैं, शायद बहू का फोन यही बताने के लिये रहा हो! चम्पालाल दम्पत्ति अपनी सदा की नोंक-झोंक को भुलाकर अपनी पोती-बहू का नाम बार-बार टीवी पर सुन रहे थे; मन में इन्तजार था कि अब बेटे महेश और पोते सुजय का जिक्र भी आयेगा... फिर शायद दादा-दादी का नम्बर भी। साथ ही अपने वर्षों से भूले-बिसरे बेटे-बहुओं का भी खयाल आया जो विदेश में जा

बसे। बेटियाँ तो खैर अपने-अपने परिवारों में अपनी-अपनी तरह के सँघर्षों/भ्रमों को झेल/झिला रही हैं, उनकी चिन्ता करने का रीत-रिवाज कभी का 'पैसे के अधिमूल्यन' की भेंट चढ चुका है। लण्डन में बसे बेटा-बहू-पोती-पोते इस उम्र में बहुत याद आते हैं। पास वाले से शिकायतें और दूरस्थ की याद मानव के भ्रम का एक और आयाम है।

ग्यारह – लण्डन से भारत

चम्पालाल-दम्पत्ति जब तक टीवी पर चल रहे दृश्यों का मर्म और मूल विषय-वस्तु जान पाते, मोबाइल की घंटी फिर से बज उठी।

उत्साहातिरेक में चम्पालालजी बहू लीला के फोन का ही इन्तजार कर रहे थे, घंटी में अपने मन की आवाज ही सुन पाये; फोन उठाते ही उल्लास से चहकते हुये बोले, -"वाह लीला! क्या बात है। अब पता चलेगा लण्डन बैठे सुरेश एण्ड ब्रदर्श को कि हम लोग भी कुछ हैं... बिटिया सुतृप्ति ने अब तक तो निराश ही किया था...किन्तु आज सारी भरपाई कर दी ... बेटा सुजय का नाम नहीं आ रहा..." और अपने पिता की यह दम्भोक्ति सुनी जा रही थी सात समुद्र पार लण्डन बैठे सुरेश-परिवार द्वारा। डोरोथी ने अपने पिता-परिवार को नाग-वंश के पक्ष में कर लिया था।
फ़ोन पर सुना चम्पालालजी ने –

"सुजय का नाम भी आयेगा बाबूजी!
यदि उस नाग जोड़े पर खरोंच भी आई
तो समझ लीजिये कि करोड़ों जन सुजय सहित
आपको चीर-फाड़कर खा जायेंगे।
समझाईये अपनी लाडली बहू लीला को,
कि अपनी यह विनाशलीला बन्द करे..."
सामने सुरेश की दोहरी दम्भ-भरी आवाज सुनकर
चम्पालालजी समझ ही नहीं पाये
कि गत दस वर्षों से जिस आवाज को सुनने
वे तरस रहे थे,
उस बेटे के साथ अपने मन की
वर्तमान खुशी कैसे बाँटे?
...और यह क्या कह रहा है सुरेश?
क्या लीला है नाग जोड़े की?
और यह करोड़ों जन कहाँ से आ गये हमसे
टकराने/भिड़ने?
कोई सरकार/कानून है कि नहीं?

… और यह सुरेश को इतना दम्भ कैसे हो गया कि अपने बाप से बात करने का तरीका/सलीका भी भुला गया।

क्रोध से तमतमाते हुये चम्पालालजी बिफरे, -"चुप कर गधे! सामने तेरा बाप है। मर गये मारने वाले … तू भी आ जाना साथ में … रख फोन … कर जो करना है।" कहकर चम्पालाल जी आवेश में उठे, अपने कमरे का गेट खोला।

पास के कमरे से सुजय कामिनी को थामे अपने कमरे से बाहर आ रहा था…

बारह – माथुर साहब

क्लब बन्द होने को आया, और माथुर साहब ने अपना आठवाँ अन्तिम पेग खाली किया। पास की टेबल पर माथुर साहब और कामिनी से जलने वाला एक मित्र-जोड़ा टीवी पर सुतृप्ति-लीला प्रकरण देखते हुये माथुर साहब को छेड़ बैठा।

माथुर साहब के मन में एक तो इस जोड़े के लिये अस्वीकृति /उपेक्षा भरी थी, दूसरी तरफ अपने पड़ौसी के प्रति भीषण आशंका और वैर। कामिनी को अपने फ्लेट में बन्द करके बाहर से ताला लगाने के पीछे उनकी आशंका ही काम कर रही थी।

माथुर साहब को आठ पैग का नशा एक झटके में हल्का लगने लगा। जिन बातों को भुलाने के लिये पैग चढाये, वे सारी बातें एकसाथ सामने आकर खड़ी हो गईं।

पास बैठे मित्र की सूचना में व्यँग्य,
पड़ौसी-कथा के साथ जुड़ी कामिनी-सुजय,
… और आधी रात का प्रभाव
… माथुर साहब ने बिना नाग-कथा जाने
विषैले नाग का रूप धारण किया
…और अपने भीतर के विष से
कुलबुलाते/दनदनाते हुये अपने फ्लेट पर पहुँचे।

यह सोचने का समय ही नहीं कि फ्लेट पर ताला क्यों नहीं लटक रहा; सीधे अन्दर जाकर बन्दूक हाथ में ली और चिल्लाये – टोम्पू !!!

टोम्पू की बाहों में कामिनी उसी समय कमरे से निकल रही थी।

तेरह – लीला महेश

लीला के मोबाईल पर जो नये-नये रहस्य
निर्मित/उद्घाटित होते जा रहे थे, वह महेश को भौंचक किये दे रहे थे। स्पष्ट था कि अब ड्राईंग-रूम का नाग सारे भूमण्डल तक मत्स्यावतार की तरह पसर गया है। अब बाहर जाकर उस छोटे से साँप को बाहर निकाल फेंकना शायद उस जैसे हजारों-लाखों महेश्वरों के लिये भी संभव ना हो, -

"अच्छा होता कि मैं इस मुसीबत की जड़
लीला को जगाता ही नहीं।
शायद लाइट जलाते ही साँप अपनी राह ले लेता,
या फिर मैं उससे भिड़ जाता।
इस लीला-बला की तुलना में
उससे भिड़ना ज्यादा सहज है।
या तो उसे मार देता, या फिर खुद मर जाता!
इस मुसीबत से तो पीछा छूटता।

…अब कम्बखत बता भी नहीं रही कि इस आधी रात में इतने फोन और मेसेज कहाँ से आ रहे हैं, क्यों आ रहे हैं?

… पल-पल लीला महारानी के चेहरे का तापमान जिस तेजी से ऊँचा चढ रहा है, उससे तो थर्मामीटर क्या यह पूरा घर ही फट पड़ सकता है।"

महेश चितामग्न हुआ। शब्द या भावों में आता सुतृप्ति का नाम महेश की चिन्ताओं को शत-गुणित कर देता। इतना होते हुये भी उसकी यह हिम्मत तो नहीं है कि लीला के आदेश की अवहेलना करके कमरे का दरवाजा खोल ले। बहुत सोच-समझ कर पूछा, - "कोई चिन्ता की बात तो नहीं लीला? … क्या टोम्पू आ रहा है, या बाहर साँप को निकाल रहा है? … तुम कहो तो मैं उसकी मदद करुँ?"

लीला पहली बार किंकर्तव्यविमूढ हुई। उसका मन किया कि महेश के गले लगकर रो ले, अपने

अहँकारको छोड़कर अपने रक्षक पतिकी शरणागति स्वीकार ले।

उसे याद आया कि ऐसा खयाल इससे पूर्व भी अनेक बार बना है, यदि ऐसा कर लिया होता तो शायद जिन्दगी किसी मीठे साँचे में ढल पाती, लेकिन अब तो बहुत देरी हो चुकी है।
अपने दिये घावों की स्मृतियाँ बाधा बनकर खड़ी हैं।
कठिनाई महेश की तरफ से ना तो कभी थी, ना अब है … कठिनाई तो स्वयँ लीला की तरफ से ही है।
अब स्वयँ को कौन कब जीत पाया है?
स्वयँ से तो लड़कर भी हारना पड़ता है,
समर्पित होकर तो हारना ही है…
…क्या करे लीला!
“सुतृप्ति से बात करके देखती हूँ … शायद समस्या हल हो जाये, या फिर समस्या उतनी विकट हो भी नहीं, जितनी लीला ने मान ली है…”
सोचा लीला ने।

दिल के विरल भाव अपनी वाणी और आॉखों में उतार कर लीला ने अपनी लाडली बिटिया को फोन मिलाया।

इस बार सुतृप्ति ने तत्काल फोन उठाया, और लीला के कुछ बोलने से पहले ही बरस पड़ी,
-"खबरदार मम्मी, नाग-देवता को कुछ ना करना … सोचना भी नहीं। मुझे मेरे जनम-जनम के साथी से मिलाने आया है नाग। … और अब मेरा आप लोगों के साथ कोई लेना-देना नहीं है … मुझे अपनी मंजिल मिल गई है … अब मुझे आपकी तुनक-मिजाजी में नहीं रहना … और खबरदार मम्मी ! अब मुझसे पंगा लेने की मूर्खता ना कर बैठना। … पापा भोले हैं, वे आपके झाँसे में आ सकते हैं … माथुर अंकल के साथ आपकी चोंचलेबाजी को बचपन से ही देखती/भोगती आ रही हूँ मैं … आप नाग को जलाने की बात मेरे दोस्तों को बोली हैं, वह आप पर बहोत भारी पड़ेगा

… देखती जाइये आप … … अब कुछ कहना है? बोलिये…" …

… लीला के पाँवों के नीचे की जमीन धँस गई, पाताल गई।

…मुँह पर कोई शब्द कैसे आये?

… गला सूखता सा लगा

… सिर घूम गया

… शरीर कम्पायमान हुआ … आँखों के सामने धुंधलका सा छाने लगा …

… फोन हाथ से छूट गया

… पलँग पर ही गिर पड़ा उसका शरीर …

चौदह – पैसा

सुरेश के घर पर पहली बार सब एक साथ बैठे। लण्डन में ऐसा अवसर आना असम्भव घटना ही माना जा सकता है। सुरेश और उसकी पत्नी जानते हैं कि यह बैठक इण्डिया के अपने पैतृक घर में आये नाग- देवता के संघर्ष से बढते भावों के कारण है; अब सबकी शरण वह घर ही हो सकता है।

बात सुरेश ने ही शुरु की-
"फोन पर पापा का प्रलाप सुनने के बाद हम दोनों ने तय कर लिया था कि अब उनका मरा मुँह देखने भी ना जायेंगे लेकिन हमारे शेयरों का आज कोई नामलेवा भी नहीं रहा, बिजनस चौपट है, केश पहले भी सरप्लस नहीं था, क्रेडिट-कार्ड की लिमिट कब की खत्म हुई। अब तो उस देनदारी पर चढता इन्टेरेस्ट नयी समस्यायें ला रहा है .... सर्वाइव करना असंभव हो गया है ...

उधर हमारे इण्डिया के मकान की कीमत अन्तर्राष्ट्रीय मार्केट में नित नया रिकार्ड बना रही है
.... उस मकान में अभी भी नाग-जोड़ा है,
आज उसके बदले लाख-करोड़ भी मिल सकते हैं .... सुतृप्ति-सचिन-ब्राण्ड ने वर्ल्ड-इकोनोमी को एकदम नये धरातल दे दिये हैं ... वर्ल्ड- की हर करेंसी फेल हो गई है ... तेल-सोना-मिनरल्स-वाटर-मेडिसिन-सेक्स-सिनेमा-लिट्रेचर-क्रिकेट किसी भी फील्ड में जब तक कोई नाग-कथा ना जुड़ जाये या सुतृप्ति-सचिन का नाम ना जोड़ा जा सके, तब तक उसमें से पैसा नहीं बनाया जा सकता।
.... और पैसा हमारे लिये आज जीने-मरने का मुद्दा है।
.... अब आप सब लोग विचार करें की हमें क्या करना चाहिये?" सुरेश ने भूमिका बनाई।

"प्रोब्लेम क्या है, उस मकान को तो मैं यहाँ बैठे-बैठे हथिया सकता हूँ ..... पाँच-पाँच सौ डालर में तो

ग्लोबली किसी को भी गोली मार देने वाले कनेक्शन नेट पर भरे पड़े हैं .... " सुरेशके बेटे डानैइ ने सुझाया। "नाट सो ईजी डियर ब्रो! .....यह सोचना भी नहीं .... सुतृप्ति-सचिन की फोलोईग अभी दो सौ करोड़ चल रही है ... हर सेकिण्ड उनके ढाई हजार ब्लाग्स पर चालीस लाख हिट्स हो रहे हैं ... अब तक तुम्हारी यह बात नेट पर जा चुकी है, क्योंकि मेरा मोबाईल रिसीविंग मॉड में है ... पता नहीं किस कोने पर कोई नाग-भक्त इस मेसेज को पकड़कर इस पर क्या ट्टिपणी कर दे... तुम तो गये ब्रो। ..... अपने बचने की सोचो..."
डोरोथी ने अपने बड़े भाई को सावधान किया।

तत्काल सभी को प्राण-भय ने कम्पा दिया ....

अपराध-जगत की ताकत पैसे के साथ जुड़कर हर पैसेवाले के गले की हड्डी बना हुआ है .... अब इस सूचना-विस्फोटक-तन्त्र ने अपराध को जेट-स्पीड दे दी

है .... संभव है कि कोई सिरफिरा नाग-भक्त/सुतृप्ति-सचिन-फैन इस मीटींग में ही डानैई को उड़ा दे ...
डानैई ने तत्काल बेक किया ....''मैं डानैई सिन्हा, लण्डन-इण्डिया, मन-प्राण से नाग-भक्त हूँ .... इण्डिया ग्रैण्डपा से मिलने नेक्ष्ट फ्लाईट से उड़ान करके जाना है ....हमें पाँच- पाँच सौ डालर की हेल्प चाहिये .... हैरोईन के डाज के कारण कोई गलत बात निकल गई हो तो मैं माफी चाहता हूँ ....''
सबने एक बार चैन की साँस ली।
इस मुद्दे पर सबको कितना सँभल कर बोलना/सोचना है, यह सबको साफ हो गया।

अब सुरेश की पत्नी बोली, ''आप अपने भाई-बहनों से सम्पर्क करें। वे भी तो उस प्रोपर्टी में शेयर-हाल्डर हैं..... उनके साथ मिलकर ही .....''
''मैंने सबसे बात कर ली है। प्रोपर्टी में तो सब इन्टेरेस्टेड हैं, लेकिन प्रोब्लेम यह है कि हमने सालों से वहाँ कोई बात नहीं की, सब बीजी रहे .....उस टूटे-फूटे

मकान और उस जाहिल महेश-लीला से भला कैसे सम्पर्क रखा जाता ...अब सारे ही शरमा रहे हैं ..... यदि हम कुछ करें तो, और वहाँ से कुछ मिलता हो तो हमारा साथ देने को तैयार हैं ....सब स्वार्थी हैं ...अब मुझे तो कुछ करना ही पड़ेगा .....”
सुरेश ने सारी बात बताई।

“क्या प्लान है पापा?” डोरोथी का दिमाग ज्यादा शार्प है, वह सीधा मुद्दे की बात पर आ गई।
उसने अपना मोबाईल भी बन्द कर दिया, ताकि सारी बात खुलकर की जा सके।
“इण्डिया चलते हैं
....शायद महेश और पापा हमें अपना
हिस्सा देने को राजी हो जायें ....
कोई बाधा आई तो इण्डिया के कोर्ट-मीडीया-कानून आराम से रास्ता बना देंगे ....
करप्टेड-इडियट्स टोप पोस्ट पर हैं
...मेनेज कर लेंगे ...

...यही राय बाकी भाई-बहनों-
और हमारे इन-लाज की भी है ..
...मैंने सबसे बात कर ली है .... ।"
सबकी सहमति हुई,
और कोई रास्ता भी तो नहीं बचा।
अगली इण्डिया-फ्लाइट से परिवार
अपने घर लौट आया ।

पन्द्रह – महेश

घबरा गया महेश।
बाहर साँप का भय और अन्दर लीला …
भय दिखाते-दिखाते खुद ही भय की भेंट चढ गई।
जाते-जाते बाँध भी गई ..
.. बोलना है तो झूठ बोलना है,
सोच-सोच के झूठ बोलना है, … अब लीला की
बेहोशी को किस भाषा/किस झूठ के साथ बोलूँ?
ना बोलूँ तो भी मरा।
कमरे से बाहर जाना जरूरी,
मगर लाइट नहीं जला सकता ..
.. हे भगवान अब मैं क्या करूँ? ..
...कर्तव्य है ...करना तो पड़ेगा ही
... पहले लीला का उपचार आवश्यक हैं
...कितना भी सताया हो, कैसा भी जुल्म किया हो ..
.. आखिर सह-धर्मिणी है
...मेरे बच्चों को जन्म दिया

पाल-पोष कर बड़ा किया है ..
.. मुझे दुख दिया तो क्या, मैं इसे सुख ही दूँगा ...
.... महेश उठा। जग से पानी भरकर लाया॥
लीला के सिर को गोद में रखकर पानी के छींटे दिये।
गालों को हथेली में लेकर प्यार से पुकारा,
- "लीला! क्या हो गया प्रिये!
... आँख खोलो लीला ...
...क्या डाक्टर बुलाया जाये?
...बोलो लीला ....तुम कहो तो टोम्पू को
...या बाबूजी-माँ को बुलाऊँ ...
... बोलो लीला! ..."
लीला ने आँख खोली।
... लम्बे समय बाद
अचानक लीला को राहत का अनुभव हुआ
...महेश की हथेली अपने गालों पर
बहुत सुकून-दायक लगी।
...महेश की गोदी शीतल झरना
...महेश की छाती से सुनाई देती धड़कनों में

लीला को परम-अश्वस्ति का संगीत सुनाई दिया
... रो पड़ी..... फफक पड़ी ...
... फफक-फफक कर रोने लगी
...अपने हाथ महेश की गर्दन से लिपटा कर ...
खुलकर ... गले की भरपूर आवाज के साथ चिल्लाकर
.....हा हा करके फ़ूट पड़ी लीला।

लीला का मन हल्का हुआ।

महेशने उसे बाहों में थामे ...
अपने कमरे का दरवाजा खोला।

सामने के कमरे से बाबूजी माँ के साथ निकल रहे हैं ...
बाजू की खिड़की से सुतृप्ति .....
गेट पर दनदनाते माथुर साहब ...
और उनके ठीक सामने सुजय अपनी प्रेमिका कामिनी
के साथ कमरे से बाहर आ रहा था।
साँप अभी ड्राईंग-रूम के कालीन पर

वैसे ही पसरा हुआ है।
कोई लाईट जलाये, या कुछ बोले;
इससे पहले ही फ्लेट के बाहर जोरदार धमाका हुआ।
सब उस धमाके और धुंये की ओट खो गये।

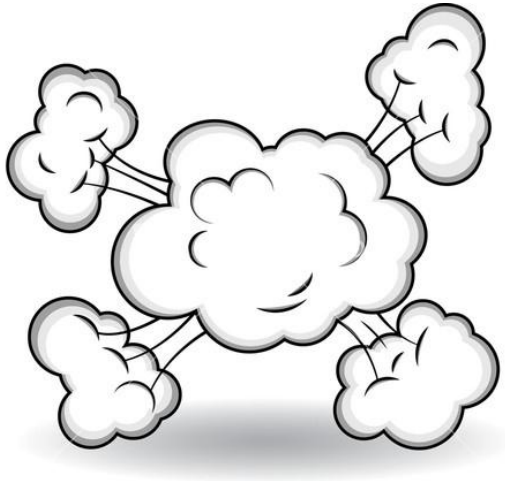

समापन

चम्पालालजी की सह-धर्मिणि उठी।
भोर से पहले का धुंधलका है।

प्रातः-क्रिया शौच-स्नान के लिए बाथरूम में घुसते हुए सहज भाव से ड्राईंग-रूम की बत्ती जलाई।

बाथरूम से नल चलने की आवाज के साथ पास के कमरे में सोये महेश की आँख खुली।

अभी वह साँप प्रकरण के विस्तारित भय
के साये में है।

बम धमाके की आवाज गली में शरारती बच्चों की पटाखेबाजी है।
ड्राईंग रूम में टोम्पू का काला लेदर-बेल्ट साँप की तरह चमक रहा है

शीघ्र प्रकाश्य साहित्य

- ✓ पश्मीना शाल से साफ़ी (उपन्यास)
- ✓ संथारा और इच्छा मृत्यु : एक विश्लेषण
- ✓ औसान (उपन्यास)
- ✓ कहानी संग्रह
- ✓ नाटक संग्रह
- ✓ शतक सीरिज
- ✓ विश्व विषाद योग
- ✓ टूटता भारत
- ✓ रामचरितमानस और वेद
- ✓ पर्यावरण शतक
- ✓ साँप
- ✓ साधक के पत्र
- ✓ संस्मरण शतक
- ✓ श्राद्ध
- ✓ सिनेमा पहेली

- ✓ टिप्पणीशतक-
- ✓ परम्परा-आराधक
- ✓ वर्तमान साँख्य-योग
- ✓ दर्शन-विवेचना
- ✓ मुक्तक शतक
- ✓ कथात्मक सहज काव्य शैली
- ✓ गणेशजी की सूंड
- ✓ लोक-मान्यताओं का रोचक गेय चित्रण
- ✓ अपनी नन्हीं कन्या के नाम लिखे कुछ चयनित पत्र
- ✓ पौराणिक बिम्बों का वर्तमान सन्दर्भ
- ✓ काला धन
- ✓ समझ ले जीवन सार